घणा दिन सो लिया रे अब तो जाग

घणा दिन सो लिया रे अब तो जाग
घणा दिन सो लिया रे अब तो जाग मुसाफिर जाग

पहला सुत्यो मात गरभ मैँ उन्दा पेर पसार
हाथ जोड़ कर बाहर निकल्यो हरी ने दियो बिसराये
जनम तेरा हो लिया रे अब तो जाग मुसाफिर जाग
घणा दिन सो लिया रे अब तो जाग मुसाफिर जाग

दूजा सुत्यो मात गोद मैँ हस हस दन्त दिखाए
बेहन भांजी रोट जिमावै गावें मंगलाचार
लाड तेरा हो लिया रे अब तो जाग मुसाफिर जाग
घणा दिन सो लिया रे अब तो जाग मुसाफिर जाग

तीजा सुत्यो पिया सेज मैँ मन मैँ बहुत उछाव
त्रिया चरित इक बहुत घणा रे हरी ने दियो बिसराए
बयाह तेरा हो लिया रे अब तो जाग मुसाफिर जाग
घणा दिन सो लिया रे अब तो जाग मुसाफिर जाग

चौथा सुत्यो शम्शाना मैँ लम्बा पेर पसार
कहत कबीर सुनो रे भाई साधो दीनी आग लगाए
दाग तेरा हो लिया रे अब तो जाग मुसाफिर जाग
घणा दिन सो लिया रे अब तो जाग मुसाफिर जाग

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/2010/title/ghana-din-so-liya-re-ab-to-jaag-musafir-jaag-

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |